नया प्रतिमान

अव्यावसायिक साहित्यिक त्रैमासिक

नवम्बर 2020

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

जन्म : 1.1.1950
निर्धन : 11.8.2020

राहत इंदौरी की ग़ज़लें

1

सबको रुसवा बारी-बारी किया करो
हर मौसम में फ़त्वे जारी किया करो

रातों का नींदों से रिश्ता टूट चुका
अपने घर की पहरेदारी किया करो

क़तरा-क़तरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो

चाँद जियाद: रौशन है तो रहने दो
जुगनू भइया! जी मत भारी किया करो

जब जी चाहे मौत बिछा दो बस्ती में
लेकिन बाते प्यारी-प्यारी किया करो

रोज़ वही इक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तैयारी किया करो

2

नदी ने धूप से क्या कह दिया रवानी में
उजाले पाँव पटकने लगे हैं पानी में

ये कोई और ही किरदार है तुम्हारी तरह
तुम्हारा ज़िक्र नहीं है मिरी कहानी में

अब इतनी सारी शबों का हिसाब कौन रखे
बहुत सवाब कमाए गए जवानी में

चमकता रहता है सूरजमुखी में कोई और
महक रहा है कोई और रातरानी में

मैं सोचता हूँ कोई कारोबार करूँ
किताब कौन ख़रीदेगा इस गरानी में

अंक 18 □ नवम्बर 2020

नया प्रतिमान

संपादक

राजेन्द्र मेहरोत्रा ● श्याम किशोर

संपादक :
राजेन्द्र मेहरोत्रा ● श्याम किशोर

नया प्रतिमान

अव्यावसायिक साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 18 ☐ नवम्बर 2020

प्रकाशक :
राजेन्द्र मेहरोत्रा

आइडियल ग्राफिक्स, इलाहाबाद

संपर्क :

1. संपादक, नया प्रतिमान
   प्रतिमान प्रकाशन
   237/444-ए , कटघर, बड़ी मस्जिद के पीछे
   इलाहाबाद-211003
   मो. 09889670181, 7905236705
2. श्याम किशोर
   सेठ हरद्वारी लाल कुंज बिहारी लाल सर्राफ
   सदर बाजार
   शाहजहाँपुर-242001 (उ.प्र.)
   मो. 09839610146

मुद्रक :
सिटी ऑफसेट
रोशन बाग, इलाहाबाद (उ॰प्र॰)

अक्षर संयोजक :
आइडियल ग्राफिक्स
प्रयागराज उ.प्र.

संपादन-संचालन : अवैतनिक

आवरण :
राजेन्द्र लहरिया

रचना तथा विज्ञापन के लिए :

ई-मेल : nayapratiman@gmail.com
edtnayapratiman@gmail.com

मूल्य :

एक प्रति : ₹ 80.00/₹ 100.00 (डाक से)
सदस्यता शुल्क : ₹ 600.00 छह अंकों के लिए, ₹ 5000.00 आजीवन

विदेशों के लिए :

एक प्रति : 10 डालर ☐ छह अंकों के लिए : 60 डालर
(सारे भुगतान प्रतिमान प्रकाशन के नाम से
युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, IFSC: UTB10CIV532, A/c No. 0889210000523 में देय)
कृपया मनीऑर्डर/चेक न भेजें।

- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, अनुवादक एवं प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।
- सर्वाधिकार सुरक्षित।
- कृपया रचनाएं यूनीकोड (मंगल फांट) में ई-मेल द्वारा भेजें।
- नया प्रतिमान से संबंधित समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

Naya Pratiman, a quarterly journal of Hindi Literature, published by Rajendra Mehrotra for Pratiman Prakashan, 237/444-A, Katghar, Behind Bari Masjid, Allahabad-211003

अनुक्रम

वैचारिक लेख :

रहम करो, मेरा दम घुट रहा है — विभूति नारायण राय — 5

जघन्य नरसंहार :

जलियांबाला बाग के सौ साल बाद — गोपाल प्रधान — 7

वैचारिक लेख :

पंडित जवाहर लाल नेहरू और प्रेमचन्द्र का भाव साम्य — श्री नारायण पाण्डेय — 11

स्मरण : डॉ नामवर सिंह

मैं इठला उठा अकिंचन देखे ज्यों स्वपन सवेरे — प्रेम कुमार — 18

फिर से पढ़ना :

गुजरा नहीं, गुजरा हुआ जमाना — तरसेम गुजराल — 30

संपूर्ण उपन्यास :

टूट — राजेन्द्र लहरिया — 36

उपन्यास अंश :

जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था — पंकज सुबीर — 73

कहानी :

कीमती — सुषमा मुनीन्द्र — 78

समीक्षाएं :

प्रेमचंद के कथा साहित्य की मानवीय अर्थवत्ता — ललित श्री माली — 83

इंसानियत : अभी संभावना है — वेद प्रकाश अमिताभ — 86

आश्वस्त रहिए, गुनहगारों की नस्ल अभी खत्म नहीं हुई — सीमा शर्मा — 88

कलात्मक शिल्प की मर्मभेदी कहानियां — श्याम सुन्दर चौधरी — 91

'धूप में नंगे पांव' उर्फ जीवन गाथा	नीरज	93
मानवीय संवेदना का चित्रपट	चंदकला	98
हार्ड होती जिंदगी में कुछ सॉफ्ट ढूंढने की कोशिश	डॉ. रश्मि पांडा मुखर्जी	102

गज़लें

राहत इंदौरी की गज़लें	(कवर) 2-3
विज्ञान ब्रत की दो गज़लें	77

कविताएं

मैं भारत का मुसलमान	भरत प्रसाद	10
एक बार फिर बेरोजगार	राकेश भारतीय	17
रेहन पर बीमार बूढ़ा	निर्मल गुप्त	101

विदेशी कविताएं

मैं हड़बड़ी में की (लंबी कवितांश)	दून्या रवाई (इराक) अनुवाद - गीत चतुर्वेदी	17
चेहरे की झुर्रियां	ओक्तावियो पाज़ (मैक्सिको) भाषान्तर : मणिमोहन मेहता	72
रह जाता कोई अर्थ नहीं	मार्था मेरिडोस (ब्राजील)/सौजन्य : गोवर्धन यादव	(कवर) 4

❐❐

वैचारिक लेख :

रहम करो, मेरा दम घुट रहा है

आखिर हम कब सीख पाएंगे कि गलती की क्षमा मांगना कमजोरी नहीं, हमारी शक्ति का द्योतक होता है।

☐ **विभूति नारायण राय**

कुछ वाक्य इतिहास में दर्ज हो जाते हैं। वे किसी एक व्यक्ति द्वारा बोले जरूर जाते हैं, लेकिन दर्ज हो जाते हैं मनुष्यता के स्मृति-पटल पर और बीच-बीच में कौंध उठते हैं मानव उपलब्धियों या असफलताओं को रेखांखित करने के लिए। मित्र द्रोही ब्रूटस के खंजर के सामने खड़े जूलियस सीजर ने अविश्वास आंखों में भरकर पूछा था, तुम भी ब्रूटस! महाभारत में युद्ध के बीच संशय पैदा करने वाला युधिष्ठिर का एक वाक्य-अश्वत्थामा मारा गया.... सुनकर महारथी, लेकिन उस क्षण सिर्फ एक पिता द्रोणाचार्य ने अपना धनुष जमीन पर टिका दिया। चंद्रमा पर पहला कदम रखते हुए नील आर्मस्ट्रांग के मुंह से निकला-इंसान का एक छोटा कदम, पर मानव जाति की एक लंबी छलांग।

ये और ऐसे ही कई वाक्य हमारी स्मृतियों में दर्ज हैं। ऐसा ही एक वाक्य अमेरिका के मिनेसोटा में पुलिस के घुटनों तले दबी गरदन वाले जॉर्ज फ्लॉयड ने छटपटाते हुए कहा था–आई कांट ब्रीद-मेरा दम घुट रहा है। अमेरिकी पुलिस निहत्थी लड़ाई में विरोधी को काबू में करने के लिए जमीन पर पटककर चोकहोल्ड दांव लगाती है, जिसमें उसका सिर घुटनों से दबाया जाता है।

इस बार जो सिर घुटने के नीचे था, वह एक अश्वेत का था, इसलिए दबाव सिर्फ एक मजबूत जिस्म का नहीं था, बल्कि उसमें वह सारी नस्लीय घृणा भी शरीक थी, जो किसी काले व्यक्ति के प्रति गोरों के मन में भरी होती है। तकनीक ने एक भयानक फिल्म पूरी दुनिया को दिखा दी-एक मध्यवय का अश्वेत आदमी एक हट्टे-कट्टे श्वेत पुलिसकर्मी के घुटने के नीचे दबा हुआ है और यह बताने की कोशिश कर रहा है कि वह सांस का मरीज है और उसका दम फूल रहा है। यह तो उसकी मृत्यु के बाद पता चला कि वह कोरोना से भी संक्रमित था। लोगों को याद आया कि साल भर पहले भी एक और अश्वेत व्यक्ति की इन्हीं परिस्थितियों में मृत्यु हुई थी और वह भी इसी तरह गिड़गिड़ा रहा था। लेकिन इस बार के वाक्य आई कांट ब्रीद की ध्वनियां अमेरिका, यूरोप, हर जगह गूंजने लगीं।

लोगों ने समवेत स्वर में गाना शुरु कर दिया, आई कांट ब्रीद। लोगों का दम इस नस्लभेदी व्यवस्था में घुट रहा था। इस बार उनके हाथों में तख्तियां थीं, जिन पर लिखा हुआ था कि ब्लैक लाइफ मैटर्स अर्थात अश्वेतों की जिंदगी का भी मतलब है। श्वेतों के महाद्वीपों अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में भूचाल आ गया। इस भूचाल के पीछे अश्वेत और श्वेत दोनों थे, बल्कि श्वेत अधिक थे। यह आंदोलन इतिहास की ज्यादतियों का भी बदला लेने निकल पड़ा है। इसने रंगभेद के बचे-खुचे अवशेषों के साथ पुराने नस्लभेदियों,